राज
कॉमिक्स
मूल्य 6.00 संख्या 564
कलयुग
अश्वराज

# कलयुग

लेखक: तरुण कुमार वाही
कलानिर्देशन: प्रताप मुलीक
सम्पादक: मनीष गुप्ता
चित्र: मिलिंद मिसाळ
विठ्ठल कांबळे

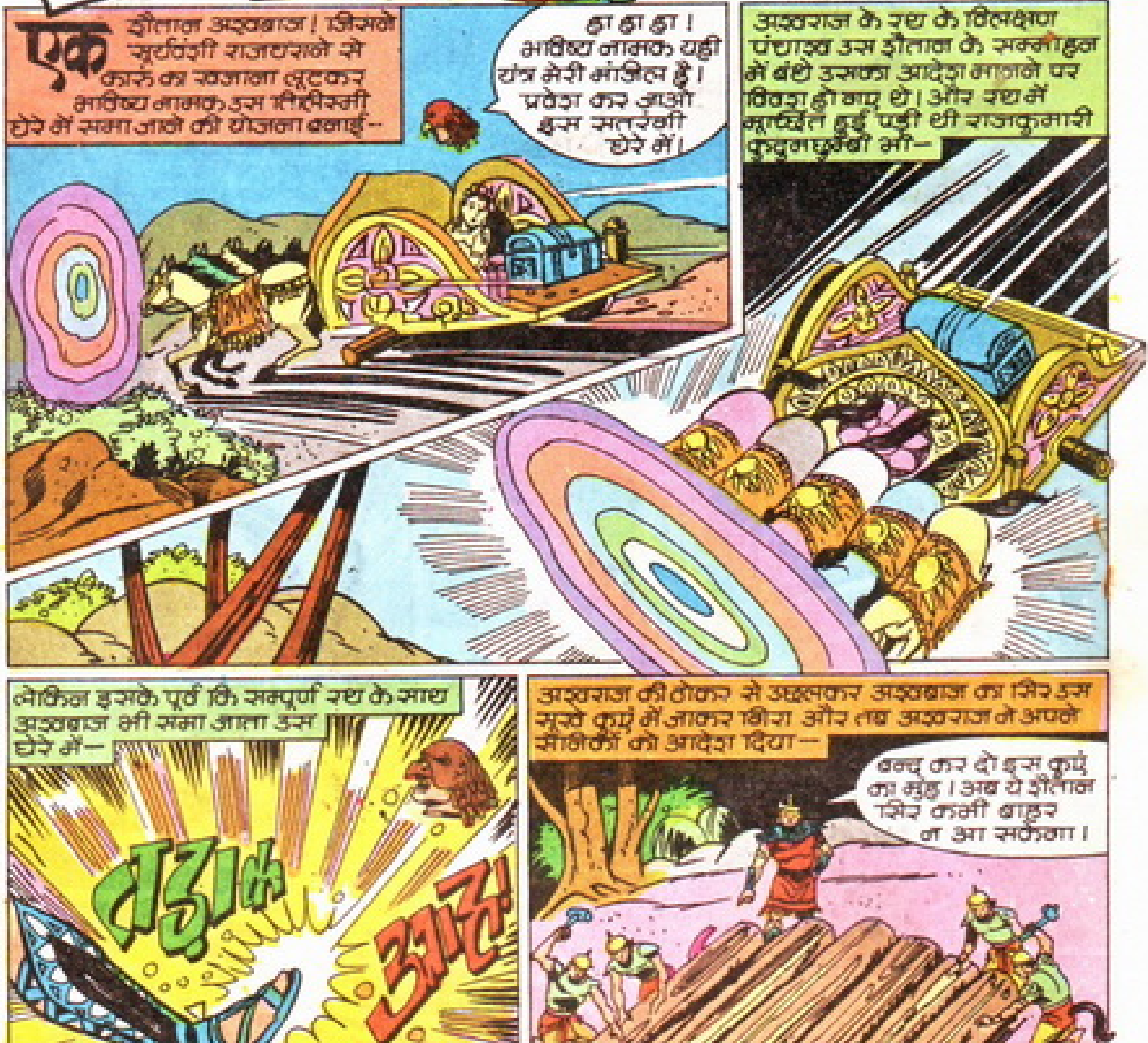

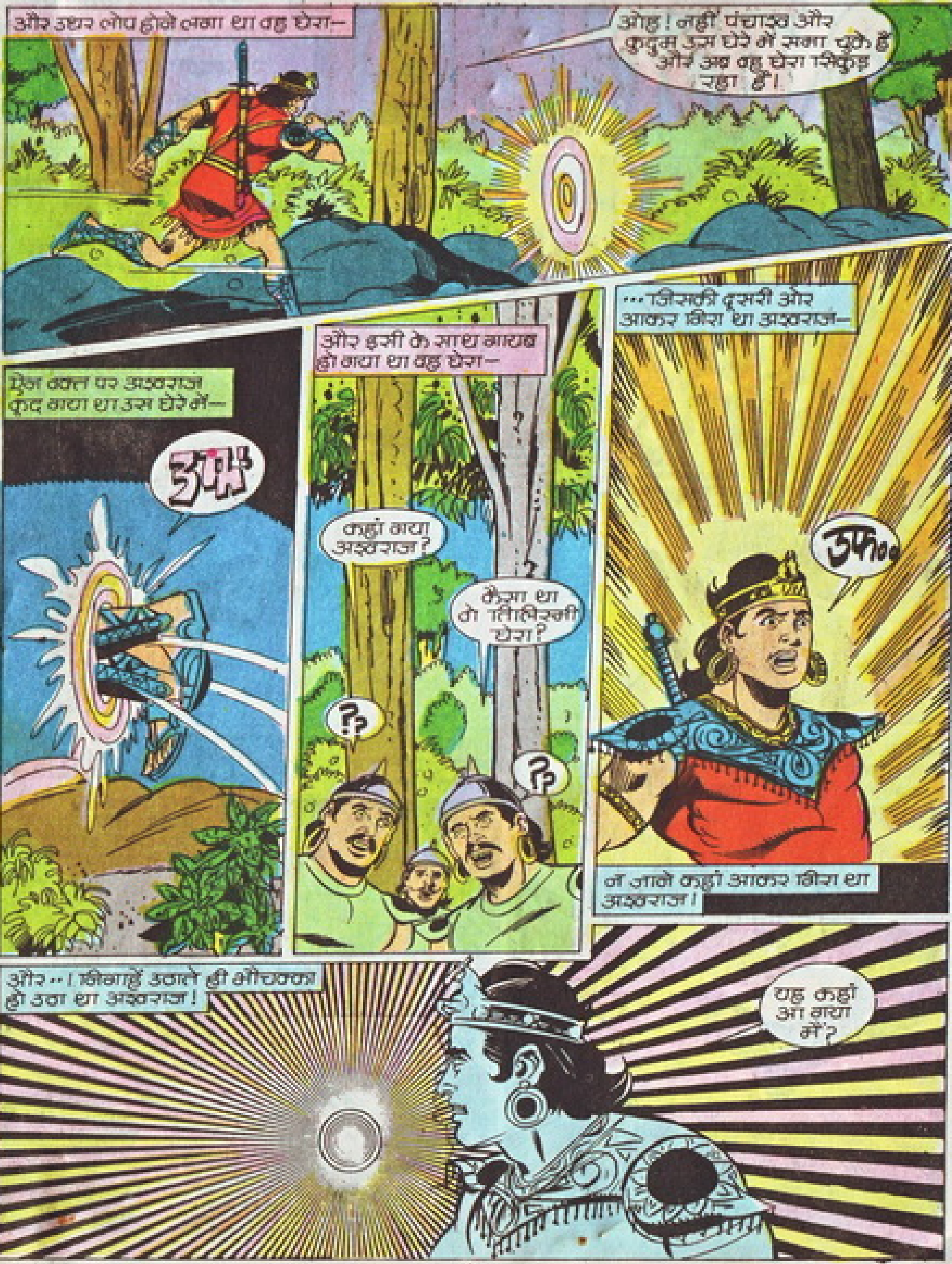
और उधर लोप होने लगा था वह घेरा—
ओह! नहीं पंचाश्व और कुदुम उस घेरे में समा चुके हैं और अब वह घेरा सिकुड़ रहा है।
ऐन वक्त पर अश्वराज कूद गया था उस घेरे में—
उफ़!
और इसी के साथ गायब हो गया था वह घेरा—
कहाँ गया अश्वराज?
कैसा था वो तिलिस्मी घेरा?
??
??
...जिसकी दूसरी ओर आकर गिरा था अश्वराज—
उफ़...
न जाने कहाँ आकर गिरा था अश्वराज!
और...! निगाहें उठाते ही भौंचक्का हो उठा था अश्वराज!
यह कहाँ आ गया मैं?

यहां तक आपने पढ़ा 'अश्वराज और अश्वबाज' में, अब आगे पढ़ें प्रस्तुत कॉमिक्स में—
अश्वराज की आंखों के सामने था वह चमत्कारी दृश्य!
वह 'भव्य शहर'! अति भव्य इमारतें। गगनचुम्बी इमारतें!
स्वप्न जैसा लग रहा है सब। अश्वलोक से निकलकर स्वप्नावली में तो नहीं आ गया हूं मैं! उफ!

और इस जलाशय को देख कर सहसा ही अग्रराज की तृष्णा आकुल हो उठी—
ओह! जलाशय। पहले अपनी प्यास बुझा लूं।
और तभी ठिठक कर रुक गया वह —
पानी! पानी! मुझे पानी पीने दो!
मुंह से झाग निकालता वह आक्रमणकार...
...जलाशय के ऊपर झुक गया और--
अग्रसैनिक ने भभकती आँखों से देखा उस आक्रमणकार को, और—
और यह सब कुछ इतनी तेजी से साथ हुआ कि अग्रराज भी ठगा सा खड़ा रह गया—
उफ! इतनी नृशंसता!
लेकिन यहीं बस नहीं किया उस दरिन्दे ने—
पानी को हाथ लगाया तूने! तेरे हाथ तो गये, अब तेरे प्राण तड़पा-तड़पा कर निकालूंगा!
आहऽऽ

भाले की नोक पर धंसा कर अश्व सैनिक के बाहर निकाले उसके कटे हुए हाथ—
इन्हीं हाथों की ओक बनाकर पानी पीना चाहता था न! अब पी! देख मैंने तेरे हाथों को जड़ से बाहर निकाल दिया है। हा हा हा। बना ले ओक।
इतना जुल्म मत कर शैतान कि इस धरती का सीना फट पड़े। आह!
धरती का सीना? हा हा हा! तू कौन से युग की बात कर रहा है। यहाँ जुल्म का राज है। पाप व अत्याचार धर्म है...
...दया व परोपकार को यहाँ हिकारत भरी निगाहों से देखा जाता है। ताकत का बोलबाला है। ताकत का। हा हा हा।
यही तो है...
कलयुग!!
नहीं!
अश्वमानव के सीने में पेवस्त हो जाने के लिए तीव्र गति के साथ बढ़ते भाले के "फल" को अपनी मुट्ठी में पकड़कर गुर्रा उठा अश्वराज—
कलयुग के शैतान!
??

इस कलयुग के निर्माता भी तेरे जैसे ही शैतान हैं...
...जिन्होंने पाप व अत्याचार को अपना धर्म बना रखा है।
...दया व परोपकार तुम्हारे ही जुल्मों के नीचे जरूर दब गए हैं...
...लेकिन अभी उन्होंने दम नहीं तोड़ा है दरिन्दे...
ताकत का बोलबाला है न? उठ! दिखा अपनी ताकत! अश्वराज देखेगा तेरी कलाइयों का जोर! उठ खड़ा हो जा शैतान!
इसे खत्म कर दो अश्वराज!

लेकिन इस अंतिम हिचकी के साथ अश्वसैनिक लाश में बदल गया और —
यह लो मित्र! पहले पानी पीकर अपनी तृष्णा को शांत कर लो।
मित्र? अहा! कितना सुखद लग रहा है इस शब्द को सुनकर। गुलुप...
और सहसा ही तब उस अश्वमानव के चेहरे पर दहशत के भाव प्रकट हुए —
अश्वराज! यहां से जल्दी से जल्दी निकल चलो, अन्यथा हम मुसीबत में पड़ जाएंगे।
ठहरो! तुम्हारे हाथ तो नहीं रहे, किंतु प्राण बचाने के लिए तुम्हारे जिस्म में लगातार बह रहे रक्त को तुरन्त रोकना बहुत आवश्यक है।
मेरा नाम घोड़क है अश्वराज!
अब यहां से चलो अश्वराज। उफ!
अरे, ठहरो भाई! पहले मैं भी अपनी प्यास बुझा लूं!
अब यह बताओ घोड़क कि तुम इतना भयभीत क्यों हो?
ठीक है चलो!
यहां से चलो। सब बताता हूं।

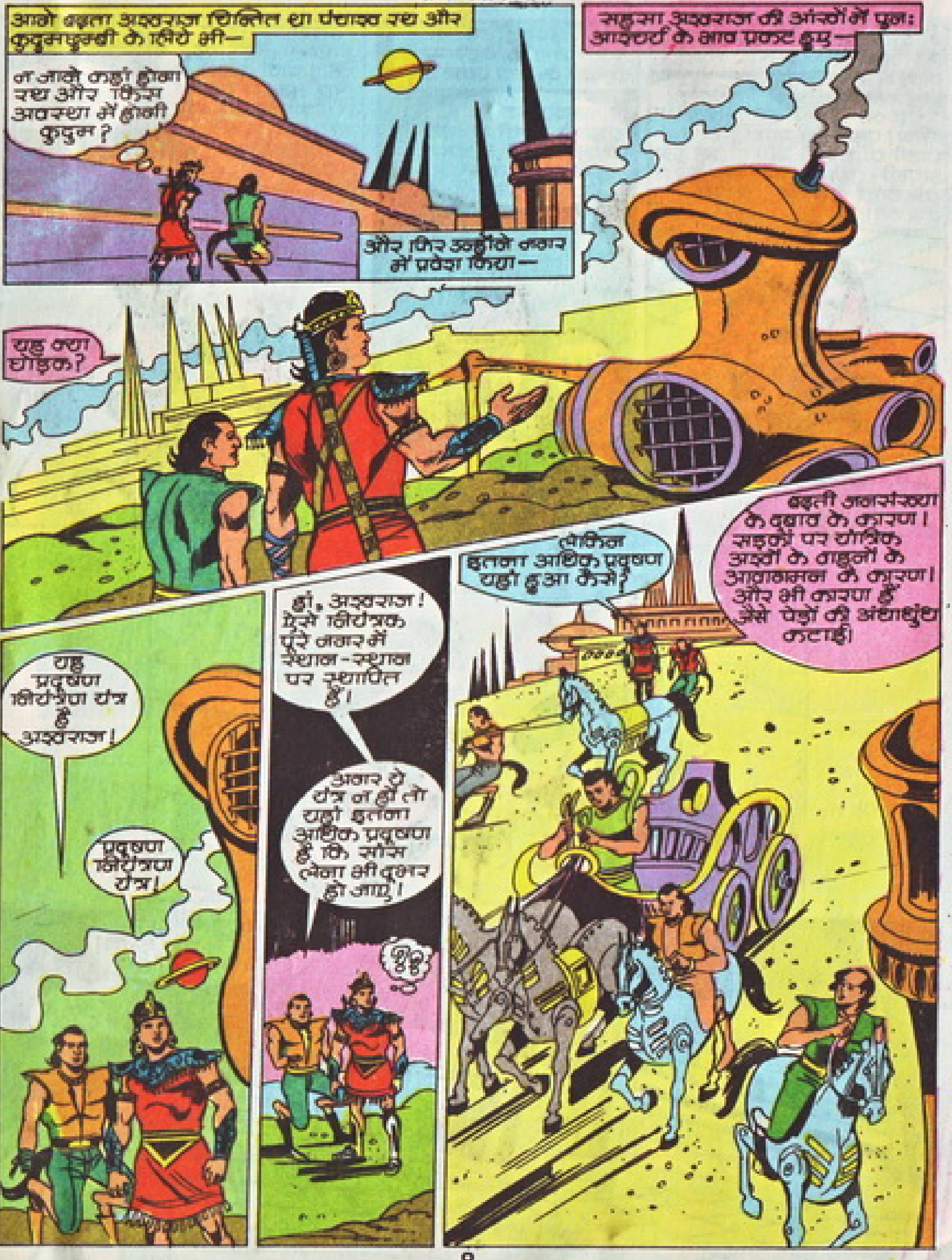
आगे बढ़ता अश्वराज चिंतित था पंचाश्व रथ और कुसुमकुमारी के लिये भी—
न जाने कहाँ होगा रथ और किस अवस्था में होगी कुसुम?
और फिर उन्होंने नगर में प्रवेश किया—
सहसा अश्वराज की आँखों में पुनः आश्चर्य के भाव प्रकट हुए—
यह क्या घोड़क?
यह प्रदूषण नियंत्रण यंत्र है अश्वराज!
प्रदूषण नियंत्रण यंत्र!
हाँ, अश्वराज! ऐसे नियंत्रक पूरे नगर में स्थान-स्थान पर स्थापित हैं।
अगर ये यंत्र न हों तो यहाँ इतना अधिक प्रदूषण है कि साँस लेना भी दूभर हो जाए!
लेकिन इतना अधिक प्रदूषण यहाँ हुआ कैसे?
बढ़ती जनसंख्या के दबाव के कारण। सड़कों पर यांत्रिक अश्वों के वाहनों के आवागमन के कारण। और भी कारण हैं जैसे पेड़ों की अंधाधुंध कटाई।

उसी पल ज़बरदस्त चीख से गूंज उठा क्षेत्र—
आह्ह्ऽऽ
फिर कोई खतरे में है!
?!!
चीख का अनुमान लगा कर उस सुनसान घाटी में पहुंचा अश्वराज—
उफ!
आह!
क्या हुआ?
स... मेरे जूतों के लिए उन्होंने मुझे आह...
इसी के साथ प्राणपखेरू उड़ गए उसके—
और जैसे सोच-सोच कर उठा अश्वराज का मस्तिष्क—
उफ! केवल एक जोड़ी जूतों के लिए एक निर्दोष अश्वारोही के प्राण छीन लिए बदमाशों ने।
ये घोर कलयुग है अश्वराज!
अश्वराज के नेत्र अजीब अंदाज में सिकुड़ रहे थे—
शायद इसीलिए तुम्हें अपने दोनों हाथ पानी की कीमत के रूप में गंवाने पड़े हैं!
हां, अश्वराज! यहां पानी की एक-एक बूंद बिकती है!
उफ!

घोडुक अश्वराज को अपने अजीबोगरीब घर के अन्दर ले गया —
आओ अश्वराज! यह मेरा घर है।
लेकिन घोडुक! तुम्हें तो इस समय उपचार की सख्त आवश्यकता है। तुम्हें तो औषधालय जाना चाहिए।
!!
यहां औषधालयों की अवस्था बहुत खराब है अश्वराज! जीवन रक्षक औषधियां नहीं हैं। बीमारों की लम्बी कतारें लगी हैं।
आओ आओ। तुम रुक क्यों गए?
अश्वराज! ये मेरी पत्नी अश्विका है और पुत्री अश्वी।
ये अश्वराज हैं अश्विका!
!!
ओह! लेकिन इसने तलवार क्यों उठा रखी है?
यहां मासूम व निर्दोष जिन्दगियां हर वक्त खतरे में रहती हैं अश्वराज! प्रत्येक आहट पर हमें अपनी सुरक्षा के लिए शस्त्र उठा लेना पड़ता है। तुम बैठो।
कहां? इस आसन पर?
नहीं! मैं ऐसे ही ठीक हूं।
अश्वराज दोनों की मासूम निगाहों में अनजाना खौफ समाया देख रहा था।

आओ, डरो नहीं!
माँ!
चोइक! अब मुझे बताओ कि जलाशय के निकट तुम एकाएक बुरी तरह से भयभीत क्यों हो उठे थे?
अश्वराज! तुम इस लोक के प्राणियों से बहुत अलग हो। मैं ये भी नहीं जानता कि तुम कहाँ से आए हो। तुम्हारी मंज़िल क्या है। हाँ, मैं नहीं चाहता था कि मेरी वजह से तुम पर कोई मुश्किल आए।
क्योंकि वह जलाशय नगर सम्राट अश्वपाणि का है। इस नगर के जल की एक-एक बूंद का स्वामी भी वही है।
जल का स्वामी?
हाँ, अश्वराज! यहाँ पानी की ज़बरदस्त कमी है। उसने नगर में जगह-जगह जलाशय बनवा रखे हैं, जहाँ से प्रजा अपनी आवश्यकता के अनुसार जल खरीदती है।
तो उसका हश्र तुम स्वयं अपनी आँखों से देख चुके हो अश्वराज!
अश्वराज अपनी नसों में एक अनोखा तनाव महसूस करने लगा था।
और अगर किसी के पास जल का मूल्य चुकाने के लिए मुद्रा न हो तो?

वह अश्वसैनिक उस जलाशय की सुरक्षा में तैनात था. जिसकी मृत्यु के बाद हम प्रत्येक पल वहां मृत्यु के साये में सांस ले रहे थे।
क्योंकि किसी पल भी सम्राट अश्वपापी के अश्वसैनिक वहां पहुंच सकते थे।
ओह! लेकिन ये तो सरासर अन्याय है।
अश्वराज! घर में थोड़ा पानी बचा था जो अपनी पत्नी और पुत्री अनी को पिला चुका था और खुद मैं तीन दिन से प्यासा था। जब प्यास बर्दाश्त न हुई तो मैंने वह खौफनाक कदम उठाया और...।
??
किंतु अश्वराज! यह कहानी एक मेरी कहानी नहीं है। मेरे जैसे सैकड़ों नागरिक लोग हैं जो प्यास से दम तोड़ देते हैं। किंतु खौफनाक अंजाम के भय से जलाशय से जल चुराने की सोच भी नहीं सकते।
पिताजी! मुझे जल चाहिए!
उफ! अश्वराज! क्या इसे मैं अपने आंसू पिलाऊं या विष का घूंट रख दूं इसकी सूखी जिह्वा पर।
शोहक की आवाज भर्रा गई और आंखें नम हो गईं।
मासूम अनी की प्यास ने झकझोर दिया था उसे!
मैं इस अन्याय को मिटाऊंगा शोहक! इस जुल्म को रोकूंगा मैं।

अश्वराज! ठहरो! रुको! तुम अकेले उसका सामना नहीं कर पाओगे।
में अश्वों के लिए जल लेने आ रहा हूँ घोड़क!
और अश्वदेव की सौगंध! अश्वों को खरीदा हुआ जल नहीं पिलाएगा अश्वराज!
चक्रवर्ती अश्वसम्राट इच्छाधारी अश्वराज को अब भी एक मामूली अश्वमानव ही समझे हुए था घोड़क।
इसी पल द्वार से प्रवेश किया उस अजीबोगरीब आकार ने। जिसे देखकर घोड़क का हलक सूख गया।
छिवुज
छिवुज
आतंक से पीला पड़ गया था आशिका का भी चेहरा।
और तभी कई अश्व सैनिकों ने धड़धड़ाते हुए भीतर प्रवेश किया और:—
खत्म कर दो उसे। यही है जलसुरक्षा सैनिक का हत्यारा। जिसके रक्त की गंध सूंघते हुए छिवुज इसे यहाँ ले आया है।
छिवुज...
रणचण्डी सी बनी शस्त्र लेकर घोड़क और सैनिकों के बीच आ डटी आशिका
मेरे स्वामी की गर्दन तक पहुँचने वाली धार को पहले मेरी गर्दन से टकराना होगा।

कई दुर्दान्त सैनिकों का वह कितनी देर तक सामना कर पाती। परिणाम वही निकला जो यह युद्ध आरंभ होने से पहले ही निश्चित था—
आऽऽऽऽ
माँऽऽ
दुश्मन से टकरा जाने की एक असफल सी चेष्टा छोड़क मैं भी की—
हत्यारो!
चट्टाक
और जमीन पर पाँवों के वापस पहुँचते ही कई तलवारों से छिद गया उसका जिस्म—
आह
बिल्ली की तरह एक सैनिक पर झपट पड़ी थी मासूम अक्षी—
आहऽऽऽ
दर्द से बिलबिलाते दुर्दान्त ने एक क्षण भी व्यर्थ न गंवाया था और—
आह
अक्षी की चीख से थर्रा उठी थीं कक्ष की दीवारें—

वापस चलो! सम्राट को अपनी इस सफलता की सूचना तुरन्त देनी होगी।
और इधर सम्राट अश्वपाणि ने यह समय निश्चित कर रखा था जल की बिक्री के लिए —
विभिन्न जलाशयों पर जल की खरीद के लिए लम्बी-लम्बी कतारें लग आई थीं।
जल की आवश्यकता के अनुसार सब लोग मुद्राओं की थैलियां अपने हाथों में रखें। और बिना शोर के वहीं पंक्ति में खड़ा हो जो अपनी हड्डियां व खाल जिस्म से जुदा न चाहता हो।

लानत! छीनो वही अश्वसैनिक थामो, जिसे अपनी जान प्यारी न हो।
अश्वराज को अजूबे की तरह देखा उन सैनिकों ने—
??
जहां पानी की कमी हो। वहां जल-स्रोतों के निर्माण करा कर नागरिकों की जल की प्यास बुझाना तो सबसे बड़ा पुण्य है। जल की बिक्री महापाप है।
हा हा हा। ताम्बी! इस अजीबोगरीब अश्वमानव को पकड़ कर मेरे निकट लाओ। ताकि मैं इसे अपने हाथों से चींटी के समान मसल दूं। और इसकी मौत के तमाशे तक पानी की बिक्री भी रोक दो।
अश्वराज को देखकर हर कोई स्तब्ध था।
यह कैसा अश्वमानव है। हम लोगों से निराला भिन्न, किंतु अब ये बचेगा नहीं। उफ!
जल की बिक्री तो आज अश्वराज नहीं होने देगा प्यारे सैनिको!

छाड़
आह!
छाड़
लहू उतर आया था अश्वराज की आँखों में—
आह्ह..
अश्वराज ने तुरन्त अपने हाथों में थमे हन्टरों को फटकारा, और—
अरे!
और उन सैनिकों के लिए वह झटका बेहद प्रलयंकारी साबित हुआ—
आह्ह
जल की कीमत चुकता लो और पानी के एवज में हाथ छीन लेते हो प्यासे नागरिकों से।
धरती पर इतना अत्याचार अश्वराज अपनी आँखों के सामने होता नहीं देख सकता।

सब मिलकर खत्म कर दो इसे! मुझे इसका सिर चाहिए।
चेहरों पर भयानक कुरला लिए सैनिक आगे बढ़े—
कई सैनिकों का वह हमला बड़ा ही जबरदस्त व प्राणलेवा था—
उफ़!
बेहद फुर्ती के साथ घूम गया अश्वराज—
तड़ाक
युद्ध में चपलता अश्वसम्राट अश्वराज का सामना करना कोई हंसी खेल नहीं था—
और इसी के साथ बाहर आ गई उसकी तलवार—
पाप व जुल्म की तो पूरी सेना मिल कर भी मुझे नहीं रोक सकती!

उन सैनिकों पर विजय प्राप्त कर अश्वराज अश्व सैनिकों के नेता की ओर पलटा तो—
ओह! ये तो कायर निकला!
अश्वराज ने तलवार वापस म्यान में डाल ली थी।
अश्वराज पलटा उन अश्वमानवों की ओर—
देखा आप सबने। जुल्म व पाप की कितनी भी ऊंची इमारत खड़ी कर ली जाए, मगर हकीकत की चट्टानों के सामने टिक नहीं सकती।...
...और हकीकत ये है कि आप सबने मिल कर उन शैतानों को अपने ऊपर जुल्म करने की इजाजत दे दी थी। अगर किसी एक ने भी इस जुल्म के खिलाफ आवाज बुलन्द की होती तो पाप व जुल्म की ये इमारत बहुत पहले ही ढह गई होती।
अश्वराज ने एक मश्क में जल भरा--
मासूम अश्वी प्यासी होगी। मुझे अतिशीघ्र जल लेकर वहां पहुंचना चाहिए!
और अब पलटा तो—
अरे! आप लोग जल क्यों ग्रहण नहीं कर रहे?
यह हिमाकत हो अश्वराज! सब अश्वपाणि हमें ज़िन्दा आग फेंक देगा।

और साधारण सैनिकों की असफलता के बाद वह अब साइबो सैनिकों को तुम्हारी हत्या का काम सौंपेगा।
साइबो सैनिक!
आऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽऽ
हां, अश्वराज! जो नागरिक मर जाते हैं उनके कंकालों पर नकली मांस चढ़ाकर व यांत्रिक शारीरिक अंगों द्वारा उसे पुनः जीवित करके साइबो सैनिक बना दिया जाता है...
इस जानकारी पर चमत्कृत हो उठा था अश्वराज—
ओह! यहां का विज्ञान कितनी प्रगति पर है। लेकिन उसका उपयोग अश्वतों की भलाई में कम, शैतानियत को बढ़ावा देने में अधिक हो रहा है।
* अश्वता – अश्वलोक में मानवता की जगह अश्वता शब्द प्रयोग होता है।
और तब अश्वराज ने उन्हें अश्वपाणि के संकट की ओर से आश्वस्त किया—
उस जालिम का अंत आज मेरे हाथों शीघ्र ही होगा। आप जल ग्रहण करें।
और तब अश्वराज के होंठों पर उभरी मुस्कान।
पियो! जितना मन चाहे पीओ। आज बुझाओ अपनी पूरी प्यास।

और फिर अश्वराज ने तेजी के साथ छोड़क के घर में प्रवेश किया—
अश्वी! अश्वी! देखो! मैं तुम्हारे लिए ढेर सारा जल ले आया हूं।
और अचानक ही वह पानी की भरी मश्क उसके हाथों से छूटकर गिर पड़ी—
अ... अश्वी! उफ, नहीं!
अभी तक प्राण बाकी थे छोड़क के जिस्म में—
छोड़क! उफ! यह सब कैसे
गया?
अहँ!
अश्व सैनिकों ने जल सुरक्षा पर तैनात उस सैनिक की मृत्यु का बदला ले लिया...
नहींsss
और क्रोध की उत्तेजना से कांप
अश्वराज—
सम्राट अश्वपाणि इस बच्ची के हत्यारे तुम हो। मुझे बच्ची के शव की सौगंध है...
छोड़क निढाल हो कर लुढ़क गया।
...आज सूर्यास्त से पूर्व मैं तुम्हारा अंत कर दूंगा।

सूर्यास्त में तो अभी समय है अश्वराज! पलट कर देख तेरी मृत्यु कितनी निकट आ गई है..
साइबोका तेरे शव को सम्राट अश्वपति को सौंपने का निश्चय करके आया हूँ अश्वराज!
!!
साइबोका! तुम्हारे सम्राट से मिलने को तो मैं भी बहुत व्यग्र हूं और कहते हैं कि सम्राट से प्रथम बार मिलने पर कोई न कोई भेंट भी ले जानी चाहिए..
ओह! साइबो सैनिक!
...तो इसके लिए तुम्हारे और तुम्हारे साथियों के शव ही क्यों न ले आऊं!!
आक्रमण!

विद्युत गति के साथ घूमी अश्वराज की तलवार—
उसी गति के साथ साइबोर्ग का शस्त्र अश्वराज से टकराया
उफ!
तीव्र गति के साथ पलटे साइबोर्ग के यांत्रिक अश्व की ठोकर के प्रहार से खुद को बचाया उसने—
ये सभी साइबोसैनिक यांत्रिक हैं और इन्हें जीवित रखे हुए हैं इनके अन्दर स्थापित कर दिये गये यांत्रिक शारीरिक भाग।
इन्हें तब तक शायद मैं खत्म न कर पाऊं जब तक कि मैं इनके जिस्मों में स्थापित वे यांत्रिक शारीरिक भाग नष्ट न कर दूं जिसमें प्रमुख है इनका मस्तिष्क। ओह!
अश्वराज को कुचल डालने के लिए आगे बढ़े साइबो सैनिक—
कुचल डालो इसे अश्वों के पांवों तले।
और तभी अश्वराज परिवर्तित हो गया अपने विलक्षण इच्छाधारी रूप में और—

इच्छाधारी अश्वराज का वह रूप निःसन्देह प्रलयंकारी और अतुल्य शक्तियों का मालिक था—
प्रलय का रुक पाना मुश्किल लग रहा था अब—
लगने लगे साइबो सैनिकों की लाशों के ढेर--
खचाक
धड़ाम
यांत्रिक मस्तिष्क के निष्क्रिय होते ही वह साइबो सैनिक धड़ाम से नीचे गिर पड़ा-

और अब उस युद्ध के लिए बचा अकेला साइबोका —
साइबोका! सूर्यास्त में थोड़ा ही समय बचा है। और अभी अश्वों के शव पर ली सौगंध भी मुझे पूरी करनी है।
और इसलिए तेरा अंत शीघ्र ही आना चाहिए।
अश्वराज के उस प्रचण्ड वार के साथ ही…
…तीव्र चिंगारियाँ छोड़ता साइबोका का शरीर उसके अश्व की पीठ पर ही ढेर हो गया —
इधर अश्वराज भी वापस अपने पूर्व रूप में लौट आया।
फिर अश्वमानवों की उस भीड़ की ओर देखा उसने, जो युद्ध के दौरान पता नहीं कब वहाँ एकत्रित हो गई थी—
मुझे सम्राट अश्वघाती तक पहुँचना है…
…ताकि उसे समाप्त करके, मैं तुम सबको उसके जुल्मों से निजात दिला सकूँ। क्योंकि जिसके राज में पानी ही बिकता हो, कहने की जरूरत नहीं कि वह शख्स कितना बेरहम होगा।
नागरिकों पर अपना विश्वास कायम किया था अश्वराज ने—
अश्वराज! मैं तुम्हारी वहाँ पहुँचने में मदद करूँगा।

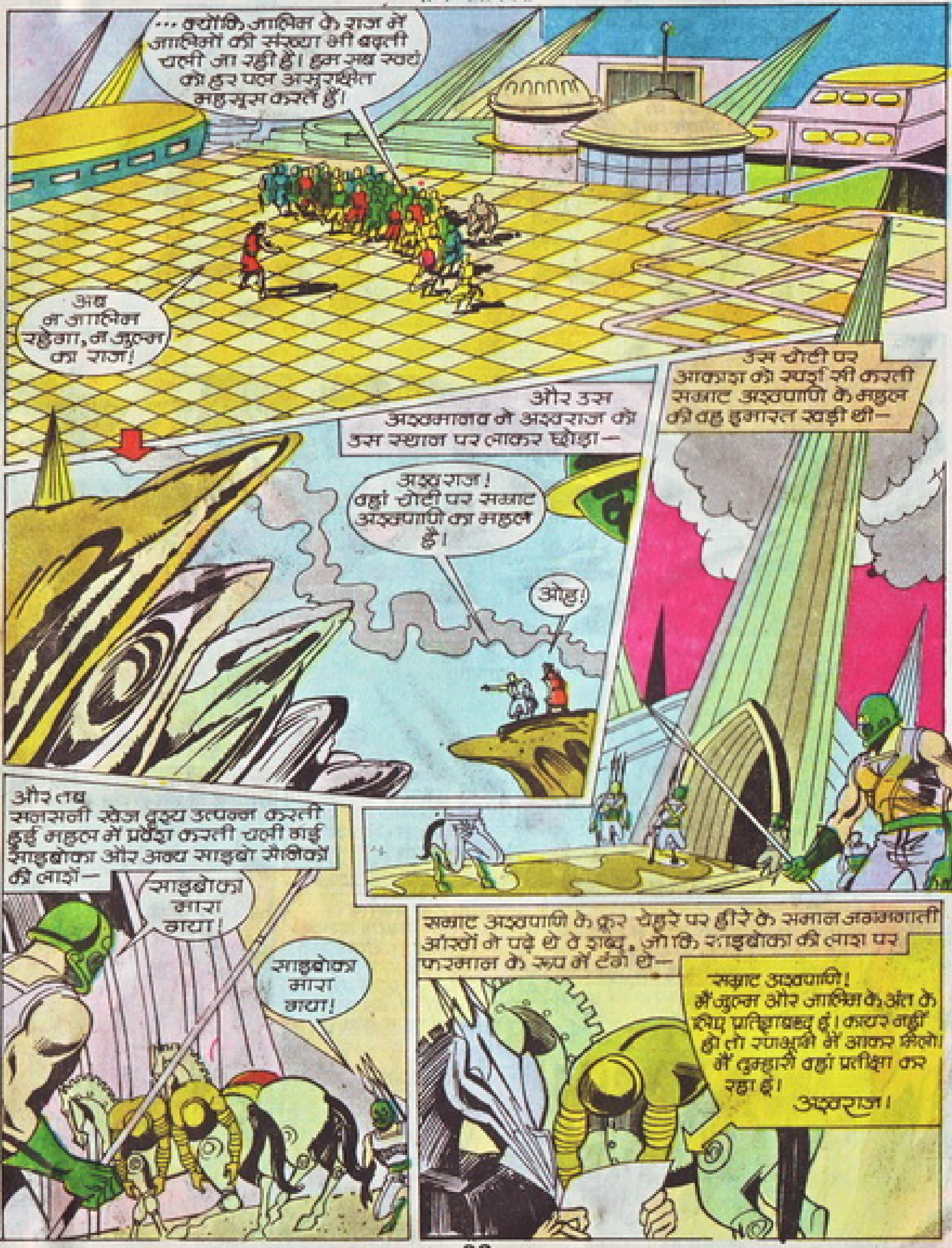
...क्योंकि, जालिम के राज में जालिमों की संख्या भी बढ़ती चली जा रही है। हम सब स्वयं को हर पल असुरक्षित महसूस करते हैं।
अब न जालिम रहेगा, न जुल्म का राज!
और उस अश्वमानव ने अश्वराज को उस स्थान पर लाकर छोड़ा—
अश्वराज! वहां चोटी पर सम्राट अश्वपापी का महल है।
ओह!
उस चोटी पर आकाश को स्पर्श सी करती सम्राट अश्वपापी के महल की वह इमारत खड़ी थी—
और तब सनसनी खेज दृश्य उत्पन्न करती हुई महल में प्रवेश करती चली गई साइबोका और अन्य साइबो सैनिकों की लाशें—
साइबोका मारा गया!
साइबोका मारा गया!
सम्राट अश्वपापी के क्रूर चेहरे पर हीरे के समान जगमगाती आंखों ने पढ़े थे वे शब्द, जो कि साइबोका की लाश पर फरमान के रूप में टंगे थे—
सम्राट अश्वपापी!
मैं जुल्म और जालिम के अंत के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हूं। कायर नहीं हो तो रणभूमि में आकर मिलो। मैं तुम्हारी वहां प्रतीक्षा कर रहा हूं।
अश्वराज।

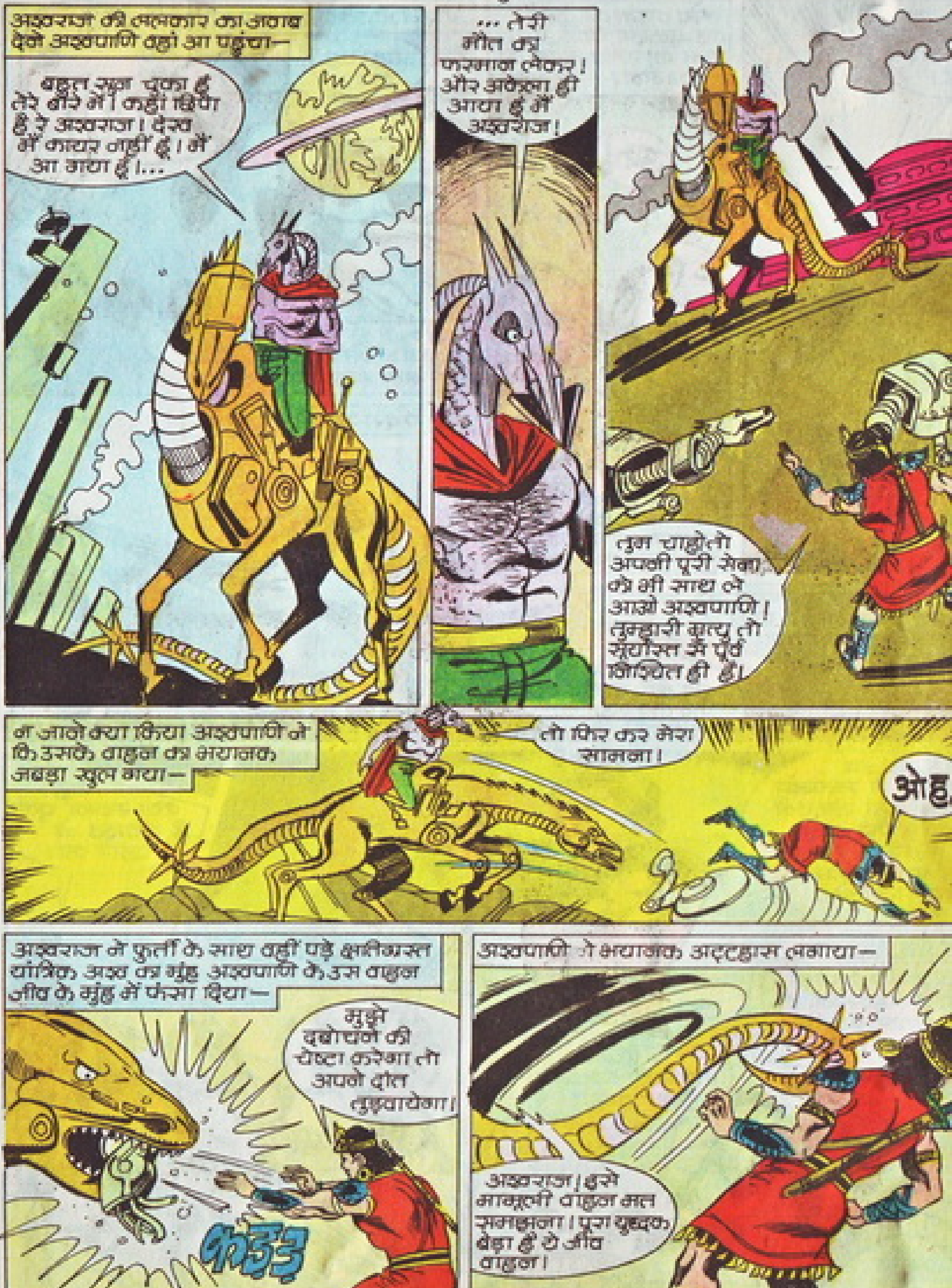
अश्वराज की ललकार की आवाज़ सुनते ही अश्वपाणि वहां आ पहुंचा—
बहुत सुन चुका हूं तेरे बारे में। कहां छिपा है रे अश्वराज! देख मैं कायर नहीं हूं। मैं आ गया हूं।...
...तेरी मौत का फरमान लेकर! और अकेला ही आया हूं मैं अश्वराज!
तुम चाहो तो अपनी पूरी सेना को भी साथ ले आओ अश्वपाणि! तुम्हारी मृत्यु तो सूर्योदय से पूर्व निश्चित ही है।
न जाने क्या किया अश्वपाणि ने कि उसके वाहन का भयानक जबड़ा खुल गया—
तो फिर कर मेरा सामना!
ओह!
अश्वराज ने फुर्ती के साथ वहीं पड़े क्षतिग्रस्त यांत्रिक अश्व का मुंह अश्वपाणि के उस वाहन जीव के मुंह में फंसा दिया—
मुझे दबोचने की चेष्टा करेगा तो अपने दांत तुड़वायेगा!
कड़ड़
अश्वपाणि ने भयानक अट्टहास लगाया—
अश्वराज! इसे मामूली वाहन मत समझना! पूरा युद्धक बेड़ा है ये जीव वाहन!

इसका प्रत्येक अंग एक शस्त्र है।
और वाहन की पूँछ का वह नुकीला सिरा अश्व-राज का सीना भेदने को लपका मगर —
उफ!
उस प्रयास में पसीने से नहा गया अश्वराज।
और तभी उठे वे दस खुर!
ओह! यह क्या?
दस खुरों की अपूर्व शक्ति से हिल गया अश्वपाणि का जीव वाहन!
और वे दस खुर थे पंचाश्व के।
उफ! रक्ताम्बर! कृष्णाशोर! अश्वपट! श्यामश्वेत और नीलकेश तुम पाँचों कहाँ चले गये थे?
यहाँ पहुँचने के बाद हमें ऐसी शैतान ने कैद कर रखा था अश्वराज!
और अब जब अस्तबल से रक्ताम्बर ने तुम्हें यहाँ संकट में देखा तो फिर कोई बंधन न रोके रख सका हमें। आओ अश्वराज! सवार हो जाओ अपने वाहन पर।
वाह! क्या स्थान चुना है पंचाश्व ने प्रहार का।
✱ अश्वराज के पाँचों घोड़ों में से इन्सानों की तरह केवल अश्वपट ही बोल सकता है।
क्योंकि मुकाबला टक्कर का होना चाहिए।

वाहक जीव के मस्तिष्क पर हुई उस चोट से वहीं पर धराशायी हो गया वाहक जीव—
उफ!
अश्वराज भी रथ से नीचे उतरा, और इसी पल टकरा गए दोनों के शस्त्र—
टनाक
अश्वपाणि ने देख, सूर्यास्त होने वाला है!
शस्त्रों के उस टकराव के बाद दोनों के ही शस्त्र उनके हाथों से छूट गए—
अश्वराज, उस सूर्यास्त के साथ तेरी जिन्दगी का भी सूर्यास्त होगा!
टनाक
और इसी के सा
गूंज उठी अश्वपाणि की
अंतिम चीख—
आ
अश्वपाणि ने अश्वराज पर छलांग लगा दी—
मृत्यु पल-पल तेरी ओर बढ़ रही है!
अश्वराज ने अश्वपाणि की थूथन पकड़ कर उसे पीछे धकेल दिया—
तुम सच कह रहे हो अश्वपाणि! तो देखो! भयानक खाई तुम्हारी ही ओर है!
और ठीक इसी पल सूर्य भी पश्चिम की गहराइयों में अस्त होता चला गया था!

विजयी का नारा लगा उठे पंचाश्व—
अश्वराज जिन्दाबाद!
और तब—
पंचाश्व! कुसुम... कुसुम भी तो तुम्हारे रथ में मूर्छित थी। वो कहां है?
क्या? क्या भाभीश्री भी रथ में थीं। उफ़! मगर अश्वराज! भाभीश्री इस समय कहां हैं, यह हममें से कोई नहीं जानता...
...क्योंकि भविष्य नामक घेरे से निकलते ही हम जैसे नींद से जागे हम पर से शैतान अश्वबाज़ का सम्मोहन टूट गया था और अब हमने रथ में झांका तो रथ में खजाना तो था मगर भाभीश्री नहीं।
—और तभी उन झाड़ियों में अटके गए हम—
अजीबो-गरीब अश्व! ले चलो इन्हें सम्राट के पास।
उसके बाद हमें अश्वपाणि के सैनिकों ने महल में ले जाकर कैद कर दिया था।
अश्वराज की आंखों में तब सर्वत्र चिंता ही चिंता दृष्टिगोचर होने लगी—
कुसुम को शीघ्र ही खोजना होगा हमें पंचाश्व!
हम तुम्हारे साथ हैं अश्वराज!
हिनहिन
हिनहिन

और तभी अश्वसैनिकों के शोर से चौंक उठा अश्वराज—
मारो! मारो! दुश्मन को मारो!
अश्वराज! सम्राट की मौत का भयानक बदला लेंगे ये!
जबरदस्त ढंग से अश्वपति की सेना ने आक्रमण किया अश्वराज पर—
मारो!
मारो!
खात्मा!
खात्म
सैकड़ों तीर, भाले, बरछे व तलवारें तीव्र वेग के साथ अश्वराज के जिस्म की ओर लपक पड़े—
उफ!
और अश्वराज की आँखों में कूल्य कर उठी मृत्यु!
और तब! अश्वराज की ढाल बन कर आ गए चंपाकर्ण वाली रक्तांबुर, कामशौर, अश्वपट, श्रावणशाली, नीलकंठ! उनकी कई चीखों व कराहटों से गूंज उठा वातावरण—
खच्च
खच्च
चंपाकर्ण!
कंठ से चीख निकलता अश्वराज...
...हड़बड़ा कर उठ बैठा—
उफ! कितना खौफनाक स्वप्न देख रहा था मैं!
समाप्त